HINDI
PAPER-I

Section 'A'

1. निम्नलिखित में से किन्हीं **तीन** पर टिप्पणियाँ लिखिए : 20×3=60

(क) पूर्वी हिंदी की बोलियों का परिचय एवं उनके अंतर्संबंध।

(ख) उन्नीसवीं शताब्दी में खड़ी बोली का विकास।

(ग) प्रारंभिक खड़ी बोली और अमीर खुसरो।

(घ) अपभ्रंश की व्याकरणिक विशेषताएँ।

2. मध्यकाल में साहित्यिक भाषा के रूप में अवधी के विकास की विवेचना कीजिए। 60

3. उन्नीसवीं शताब्दी में नागरी लिपि के विकास पर प्रकाश डालिए। 60

4. वैज्ञानिक एवं तकनीकी क्षेत्र में हिंदी के विकास की समीक्षा कीजिए। 60

Section 'B'

5. निम्नलिखित में से किन्हीं **तीन** पर टिप्पणियाँ लिखिए : 20×3=60

(क) नाथ साहित्य

(ख) पृथ्वीराज रासो

(ग) महावीर प्रसाद द्विवेदी

(घ) हिंदी रंगमंच का विकास

6. संत काव्य-परंपरा का उल्लेख करते हुए उनकी प्रमुख प्रवृत्तियों की विवेचना कीजिए। 60

7. ''प्रेमचंद की कहानियाँ व्यापक सामाजिक आधार पर विकसित हुई हैं'' कथन की समीक्षा कीजिए। 60

8. हिंदी आलोचना के विकास में आचार्य रामचंद्र शुक्ल के योगदान पर प्रकाश डालिए। 60

No. 00562

12-F-TCL22-645

HINDI

Paper II

(Literature)

Time Allowed : Three Hours | *Maximum Marks : 300*

INSTRUCTIONS

Candidates should attempt questions 1 and 5 which are compulsory, and any THREE of the remaining questions, selecting at least ONE question from each Section.

The number of marks carried by each question is indicated at the end of the question.

Answers must be written in HINDI.

SECTION 'A'

1. निम्नलिखित पद्यांशों में से किन्हीं *तीन* की संदर्भ-सहित व्याख्या करते हुए उनकी काव्यगत विशेषताओं को स्पष्ट कीजिए : *20×3=60*

(क) कहेहू तें कछु दुख घटि होई । काहि कहौं यह जान न कोई ।।
तत्त्व प्रेम कर मम अरु तोरा । जानत प्रिया एकु मनु मोरा ।।
सो मनु सदा रहत तोहि पाहीं । जानु प्रीति रसु एतनेहि माहीं ।।
प्रभु संदेसु सुनत वैदेही । मगन प्रेम तन सुधि नहिं तेही ।।

(ख) "धिक् जीवन को जो पाता ही आया विरोध,
धिक् साधन जिसके लिए सदा ही किया शोध ।
जानकी ! हाय, उद्धार प्रिया का हो न सका ।
वह एक और मन रहा राम का जो न थका,
जो नहीं जानता दैन्य, नहीं जानता विनय
कर गया भेद वह मायावरण प्राप्त कर जय,
बुद्धि के दुर्ग पहुँचा विद्युत्-गति हतचेतन
राम में जगी स्मृति, हुए सजग पा भाव प्रमन ।"

(ग) "श्रेय नहीं कुछ मेरा :
मैं तो डूब गया था स्वयं शून्य में —
वीणा के माध्यम से अपने को मैंने
सब कुछ को सौंप दिया था —
सुना आपने जो वह मेरा नहीं,
न वीणा का था :
वह तो सब कुछ की तथता थी
महाशून्य
वह महामौन
अविभाज्य, अनाप्त, अद्रवित, अप्रमेय
जो शब्दहीन
सबमें गाता है ।"

(घ) मैं ब्रह्मराक्षस का सजल-उर शिष्य

होना चाहता

जिससे कि उसका वह अधूरा कार्य,

उसकी वेदना का स्रोत

संगत, पूर्ण निष्कर्षों तलक

पहुँचा सकूँ ।

2. "सामंती समाज की जड़ता को तोड़ने का जैसा प्रयास कबीर ने किया वैसा प्रयास कोई दूसरा नहीं कर सका" — इस कथन के आधार पर कबीर के कृतित्व का सोदाहरण मूल्यांकन कीजिए । *60*

3. "फूल मरै पै मरै न बासू" — इस कथन के आधार पर जायसी की प्रेम-व्यंजना के महत्त्व का आकलन कीजिए । *60*

4. 'कामायनी' को जयशंकर प्रसाद की अन्यतम काव्यकृति क्यों कहा जाता है ? सतर्क और सोदाहरण अपने मत का उपस्थापन कीजिए । *60*

SECTION 'B'

5. निम्नलिखित गद्यांशों में से किन्हीं *तीन* की ससंदर्भ व्याख्या करते हुए चयनित गद्यांशों की अभिव्यंजनागत विशेषताओं का रेखांकन कीजिए : $20 \times 3 = 60$

(क) प्रिय का चिंतन हम आँख मूँदे हुए, संसार को भुलाकर करते हैं, पर श्रद्धेय का चिंतन हम आँख खोले हुए, संसार का कुछ अंश सामने रख कर करते हैं । यदि प्रेम स्वप्न है तो श्रद्धा जागरण है । प्रेम प्रिय को अपने लिए और अपने को प्रिय के लिए संसार से अलग करना चाहता है । प्रेम में केवल दो पक्ष होते हैं, श्रद्धा में तीन । प्रेम में कोई मध्यस्थ नहीं, पर श्रद्धा में मध्यस्थ अपेक्षित है । प्रेमी और प्रिय के बीच कोई और वस्तु अनिवार्य नहीं, पर श्रद्धालु और श्रद्धेय के बीच कोई वस्तु चाहिए ।

(ख) जब स्वजन लोग अपने शील-शिष्टाचार का पालन करें — आत्मसमर्पण, सहानुभूति, सत्पथ का अवलंबन करें, तो दुर्दिन का साहस नहीं कि उस कुटुम्ब की ओर आँख उठाकर देखे । इसलिए इस कठोर समय में भगवान् की स्निग्ध करुणा का शीतल ध्यान कर ।

(ग) अगर प्रेम ख़ूँख़्वार शेर है तो मैं उससे दूर ही रहूँगी । मैंने तो उसे गाय ही समझ रखा था । मैं प्रेम को सन्देह से ऊपर समझती हूँ । वह देह की वस्तु नहीं, आत्मा की वस्तु है । सन्देह का वहाँ ज़रा भी स्थान नहीं और हिंसा तो सन्देह का ही परिणाम है । वह सम्पूर्ण आत्मसमर्पण है । उसके मंदिर में तुम परीक्षक बन कर नहीं, उपासक बन कर ही वरदान पा सकते हो ।

(घ) परिवर्तन ही गति है । गति ही जीवन है । अमरता का अर्थ है — अपरिवर्तन, गतिहीनता । देवी, यदि सूर्य जैसे और जहाँ है, वहीं स्थिर हो जाए ? यदि जलवायु जैसे और जहाँ स्थिर हो जाए, सब स्थिर और अपरिवर्तनशील हो जाएँ तो क्या जीवन काम्य और सुखमय होगा ?

6. नाटकीय तत्त्वों के आलोक में 'आषाढ़ का एक दिन' आपको किन-किन बिन्दुओं पर आकृष्ट करता है ? तर्कपुष्ट ढंग से अपना अभिमत प्रकट कीजिए । *60*

7. हिन्दी निबन्ध-यात्रा में आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी की विशिष्ट पहचान को सतर्क रेखांकित कीजिए । *60*

8. 'मैला आंचल' के शीर्षक की सार्थकता पर विचार करते हुए इसके प्रतिपाद्य का विवेचन कीजिए और एक आंचलिक उपन्यास के रूप में इसकी सर्जनात्मक उपलब्धियों का संक्षेप में परिचय दीजिए । *60*

VISION IAS